

श्री जैनधर्मप्रकाश

JAIN DHARAMA PRAKASH.

पुस्तक दुर्लभ वैराक्ष शुद्धि । ५ संवत् १८४६ अंक. २ ब्ले

मालिनीहृतम्.

प्रशम रस निमग्नं, दृष्टियुग्मं प्रसन्नं:
वदन कमल मंकः कान्दिनी संग शून्यः
कर युग्मपि यच्च, शख्स संवंधं वन्ध्यं
तदसि जगति देवा, वितरागस्त्वमेव ॥ १ ॥

प्रगट कर्ता.

श्री जैनधर्मप्रसारक सभा
भावनगर.

अमदाबादमां.

“ओंक्लो वर्तीक्षुलर श्रीनींग प्रेसमां”
श. १० नथुसार्थ रतनच्छ छापी भसिद्ध कर्त्ता.

श. १८११; भने १८५०

भूत्य वर्ष १ नो ३१-०-० अगाउथी पोर्टेन ३०-३-० एड.
मुद्रित अंक ब्लेना ३.०-२-०

अनुक्रमणिका.

विषय.

| | |
|---|--------|
| | पृष्ठ. |
| १ प्रश्नोत्तर (अध्यात्म मुनिराज शीघ्रातभासाभनी) | १७ |
| २ दर्शनगति | २० |
| ३ सामाजिक | २२ |
| ४ अभरहत आने भिन्नानंद | २६ |

आस सूचना.

शान्तुं थङु सान शानावरणी कर्गता क्षय करे छ अने शानानी आसातानाथी शानावरणी कर्म व्याधाय छ माटे चापानीआने रभडतुं न भेदतां उंचे आसने भुक्तुं अने आवात लक्ष्यपूर्वक वांची व्याशक्ती धर्मकार्यमां ग्रंवत्तिलुः.

आहुकोने लेट.

रतिसार कुमारनुं चरित्र.

के आहुको तरक्षी लवाज्जम भयेलुं छ तेगने सदरहु लेएनी युको भोक्तावी दीधी छ. के आहुकोले तेनुं पैस्टेज भोक्तव्युं न होय तेमणे एक दीकीट भोक्तीने युक भंगावी लेवी. अवापि पर्यंत लवाज्जम भोक्ताववानी आणस करनार आहुको पणु आ चालु थेला वर्षिता लवाज्जम साथे एक दीकीट वधारे भोक्तावे तो हज एक भास पर्यंत सदरहु युक्तो लाल आपशुः.

अरिद करवा इच्छनारे देक युक्ता चार आना भोक्तावा परहेशवाणाने पैस्टेज भार्द.

श्री जैनधर्म प्रकाश.

JAIN DARMA PRAKASH.

हाहेण।

धैरा नाद वगाइतां, भररर थाय आकाश;
तेम भूतण गञ्जेवतु, प्रगटयु नैनप्रकाश।

पुस्तकदुर्शाक १८१२, वैशाक्षुदि १५, वीर संवत् २४१६ अक्टूबर

श्री जैन धर्मो जयतिराम्.

प्रश्नोत्तर.

अनेक गुण संपन्न श्रीमन्महाराज श्री आत्मारामजी
(आनन्दविजयजी) ए बंगालानी एशियाटीक
सोसैटीना सेक्टेटरी डाक्तर होनेलना
प्रश्नोना आपेला उत्तरो.

प्राप्तवा अंडामां दर्शाया प्रभाषुनो पत्र व्यवहारे चालतां श्रीमन्म-
हाराज्ञथी-आत्मारामजी (आनन्दविजयजी) तरक्ष्य उपकेश गच्छनी पट्ट-
वणी उत्तरापीने मोक्षवेदा उपरथी ते संष्ठधी प्रश्नो हिंदुस्थानी जाप्या-
मां दर्शाई आवेदा ते शोक साये न लभतां वाचक वर्गनी सुगमताने
आतर तेना उत्तर के गहाराज्ञथीयो मोक्षवेदा ते दरेक प्रश्नो अने दरेक
उत्तरो असत आपामां आ नीचे दीर्घीयो छीयो.

१८

श्री कैलाशमे प्रकाश.

१ प्रश्न—उपर्युक्त गच्छका पट्टावणी में यह लिखा है कि ‘कुकुराचार्यने आरा वर्ष पर्यंत पष्टपंचाचाम्लसहितं शीया ईनशब्दोऽका क्या अर्थ है ? और यह क्या हिया है ?

उत्तर—आचाम्ल यह जो शब्द है सो उनमें के शास्त्रोंमा पारिभाषिक(सांकेतिक)शब्द है। ईसका अर्थ यह है कि आच-आच्छ आच उक्त वर्ष शाकभाज आहिउनका उनके पार्यी शास्त्र-सोई है अर्थसे=उत्तराचारी ३-षे बोजनकी साथ-तिसका नाम आचाम्ल कहते हैं। भावार्थ यह है कि इथा जोजन पानी के साथ बीजे के अद्युत्तरमें ऐक्षिण्यमत आना सोभी हिनमें आना, रविका नहीं ईनका नाम आचाम्ल कहते हैं। होहिनका उपनास ऐक साथ करना उनका नाम छठु कहते हैं। और छठु के पारणे में अर्थात् तिसरे हिनमें पूर्वोक्त रीतिसे आचाम्ल करना, आचाम्लसे दूसरे दिन ईर छठु करना, ईर पारणेवाले दिन आचाम्ल ईसरीतिसे करना उनकुं पष्टपंचाचाम्लसहितं कहते हैं। ऐसा तपारावर्ष तक निरंतर कुकुराचार्यने शीया है।

२ प्रश्न—उसी पट्टावणीमें शामक शेषके दृष्टांतमें दृढ़ गणेश और सप्त्यणा चारे हतो न भविष्यति लिखा है। उसका क्या अर्थ है ?

उत्तर—जो साधु शाननाम होते हैं अर्थात् आचार्यकी आसामें पांच साल साँडुओंकुं लेकर अक्षग विचरते हैं उनकुं गणेश कहते हैं। ऐसे ऐसे गणेश ऐक गच्छमें बहेत होते हैं उनमेंसे जो बड़ा होवे अर्थात् निसकुं प्रथम गणेश पढ़ी दी गई होवे उनकुं दृढ़ गणेश कहते हैं।

और सप्त्यणा चारे हतो न भविष्यति यह पाठ हमडां आशुद्ध गा-लूम होता है। हमारे ज्ञानमें तो धूस रथानमें सोप्यनाचारे हतो न भविष्यति औसा पाठ चाहिए जिसका अर्थ वरापर समनमें आशक्ता है।

३ प्रश्न—उसी पट्टावणी में ४२ में आचार्य सिद्धसूरिङ्गं विसावि स्वोपक इह है ईस धक्काओऽका क्या अर्थ है ?

उत्तर—यह ऐक सांकेतिक शब्द है। भावार्थ यह है कि निसके शरीरमें अर्थ आत्मा में संपूर्ण आचार्य के लैसे लक्षण चाहिये वैसेहि लक्षण अर्थ युक्त होवे उसकुं वीस विश्वोपक कहते हैं।

प्रश्नात्मक.

१८

४ प्रश्न—जरीपटावली में लिखा है कि ४३ में आचार्य कक्ष स्थाने पन्च प्रमाणव्रथ जनाये हैं यह पुस्तक क्या डाक्टरों है या नहीं ? जो है तो उसमें यथा आगत लिखी है ? अब मुन्जड़ों बिसठी नक्षत्र भिक्ष शक्ती है ?

उत्तर—यह पुस्तक हमारे हेख्नेमें आज तक नहीं आया है.

५ प्रश्न—जरीपटावलीमें पटमहोत्सव लिखा हैसो क्या है ?

उत्तर—जिन गंधीरमें आठ हिन ताठ पूजन किया जाता है अब चतुर्विध संधि ऐकड़ा होता है उस वर्षत युर शिष्यके कठनमें युर परंपराका गंध सूनाते हैं. गंध सूनाये पिछे वास्केप डाक्टने में आता है. ईसाहि किया करने में आती है तिसका नाम पटमहोत्सव कहते हैं.

६ प्रश्न—जरीपटावली में यह शब्द आता है—तद्वचनादेश सप्तकेवे व्ययोरुत्तः यह सम्भेत्र अस है?

उत्तर—जिनमंहीर, जिनप्रतिभा अब शान्तेपुस्तक—ईनतीनों^१

^२ ^३

नवीन जनावने; साधु साधीकुं अन, पानी, वस्त्राहि धन हेता अब श्रा-
^४ ^५

वक आविकाङ्क्ष अथागोप्य धनाहि हेता ईसका नाम सम्भेत्रमें धन व्यय है.
६ ^७
रना कहेतै.

७ प्रश्न—जरी पटावलीमें श्री आदिनाथस्यपटोद्वारस्य ईन शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर—जैनभतमें ऐसे केख हैं कि भजपम हेत सेंकेकर और गन्ध भादशाह के ऐट भादर भादशाह के वर्षत पर्वत १६ वर्षत शनुंजय पर्वत के उपर ८३ उद्धार होये हैं. अब छोटे असाध्य होये हैं तिनमेंसे ४३ उद्धारके वर्षतकी जैनभजेव भगवान्की प्रतिभावी वे सतमें ७. द्वारके समयमें पर्वतकी युस युद्धमें २४३ी गर्धी. ज७ समराशाने १५ भा उद्धार कराया तथ सिद्धसुरीसे विनती करी कि मुन्जड़ों ७३ उद्धारकी प्रतिभा युद्धमें नीकणवा हो. तथ जिन आचार्यने ७३से निकणवा ही अब समराशाने वे, शनुंजय उपर रथापन करी.

उद्धार बिसदुं कहेते हैं कि अद्योत धन भर्तके ने पूरणे सभ महि-रोंकुं आदसे नवे जनवावे.

२०

थी जैनधर्म प्रकाश,

सत्संगति.

सुखनो निरंतर सत्संगति शाखा इरे छे. सत्संगति प्राणीने, अस्त्रं लाभकारक थाय छे. नेतो संग करवाची शुभ मार्ग नेहावानु धने छ तेते सत्संगति कहे छे अने नेतो संग करवाची उन्मार्ग नेहावानु धने छ तेने हःसंगति कहे छे. सत्संगति मुनि भदारानो अने धर्मिष्ठ आवडो संग करेते तेतु नाम छे ए अने संग प्राणीने अवश्य करवा याय छे. नेतो ते अने संगथी परांमुण होय छ तेतो आ संसारनेविषे खुंची जर्हने प्राप्ते हुर्तिगामी थाय छे. अने ले ते अने प्रकारना उत्तम संगने विषे नेतांश्चेत रहे छे तो संसारना कार्य करतो सतोपशु न्यारापशु धारणु करीने यथाशक्ति धर्म धर्मगां नेहार्हने प्राप्ते सहगतितु भाजन थाय छे. उत्तम जननो संग प्राणीने डेला लाश उत्तम इरे छे ने विषे अंक जैन कहे छे ते—

हरतिकुमतिभिन्नेमोहंकरोतिविवेकितां

तिरातिरितिसूतेनीतितनोतिगुणावलिं

प्रययतियशोधत्तेधर्मव्ययोहतिहुर्गति

जनयतिरुणांकिनाभीष्टगुणोत्तमसंगमं ॥ १ ॥

आवाये— भतुष्योने युणेकरीने उत्तम एवा ननोनो संगम हुं शु वांछितने नथी पूरतो अथात् सर्व प्रकारना वांछित पूरे छे. दुभतिने उत्तम इरणु करे छे, अद्यान्तु विद्यरणु करे छे, विवेषापशुनो इत्यत इरे छे, संतोषने अथे छे. तीनिने उपनने छे, युक्तनी ब्रह्मी प्रकट करे छे, यज्ञो विस्तार इरे छे, धर्मो धारणु करे छे अनो इगारना नसा इरे छे अर्थात् उत्तम जनोनो संग सबे प्रकारना अनीष्ट पूरे ०

वर्णी इन्हुं छे ५—

लब्धुंबुद्धिकलापमापदमपाकर्तुविहर्तुपथि

प्राप्तुंकीर्त्तिमसाधुतां विधुवितुं धर्मसमासेवितुं

रोकुंपापविपाकमाकलचित्स्वर्गपवर्गश्रियं

चेत्त्वंचित्तसमीहसेगुणवतां संगंतदंगकिरु ॥ २ ॥

सत्संगाति.

२१

बायार्थ—युद्धितो समुद्भावाने, आपदानो नाश करवाने, न्याय गार्जनां विचरणाने, कार्ति प्राप्त करवाने, असौन्नत्यने स्वेच्छ करवाने, धर्मनी समाजेवना करवाने, प्रधनिपाइतो रोध करवाने, अनें स्वर्ग तथा मोक्ष लक्षितो। उपभोग करवाने जे तु ईच्छा करतो होय तो शुश्रूषातनो संग अंगीकार कर।

उपरना ऐ श्वेष उपरथी शुश्रूषातनो संग उट्सो लाभ करे छे ते ज्ञानार्थ आवे छे। शुश्रूषातना संग शिवाय ने प्राणी इत्याणुनी वांछा करे छे तेतुँ काई प्रकारे इत्याणु थतुँ नथी। इहुँ छे के ने प्राणी शुश्रूषातना संग शिवाय इत्याणुने ईच्छे छे ते निर्दयपणे बुन्यने वांछे छे; अन्याय करतो सतो कार्तिने वांछे छे, प्रभावी रखा सतो। जनने वांछे छे। शुद्धिविनानो छतां काव्य करवा ईच्छे छे, उपराम अने द्वा शिवाय तपना इग्नो वांछे छे, तुच्छगतिवाणो छतां शास्त्र पठन करवाने ईच्छे छे, नेत विनानो छतां घटप्रयादि वस्तुओने जेवानी ईच्छा करे छे अने चल चितवाणो छतां ध्यान करवा ईच्छे छे अर्थात् ये संघणा वाना जेम पनतां नथी तेम शुश्रूषातनां संगम शिवाय इत्याणु थतुँज नथी।

शुद्धी जनना संगनां उपर ऐ बेह जताव्या छे, एक मुनिभद्धारानो संग अने भीने धर्मार्थ आवक्तो संग, प्राणीयो आ। संसारने पिसे अनेक प्रकारनी मौलगणां लपेटाइने शुन्नी रखा छे। काढ तो रात द्वित्र दृश्य जीववाभां तत्पर रहे छे, काई बुन्व वांछाभां लाङ्यो। रहेछे, काई खी सेवाभां तत्पर रहे छे, काई कुड्डें वर्जनां सांसारिक प्रापिकारी क्यों। करी आपवाभां शुद्धायेहो। रहे छे अने काई भीलु अनेक प्रकारनी वांछताभां प्रवत्त रहे। उतो चाहुभैष्णो मौल जगभां मुक्तार्थ रहेका होय छे। तेज़ समयनां ते संसारना जोदगारी लारो याप्ताने गाटे शुश्रूषातन ने। संग्रह समये छे अन्यथा आपरण ते सांसारिक कायोगां भग्न। रह्या सतो हुड्डिन आप करे छे। तेवे प्रसंगे जे मुनिभद्धारान्नों संग होय अने निरंतर जे शोक वन्धन पशु तेमना वंदन निभिसेन्वानो परिचय होय तो अनेक प्रकारनो सदुपदेश अवशु करवाथी चितवृत्ति डामण थाय छे, पाप कर्याती दूर रहेवा ईच्छा थाय छे, संसारथी उद्दिशता थाय छे, अने सांसारिक कायोगां राचवा पशुं डभी थाय छे तेगंज धीना पशु अनेक प्रकारना लाभ थाय छे। धर्मार्थ आवक्तो प्रसंग होय छे तो ते पशु

२२

श्री जैनवर्म प्रकाश.

ज्यारे ज्यारे सांसारिक कार्योंमां बहुत प्रवृत्त थई गच्छेक होणे छे खारे खारे अनेक प्रकारना जिवाहरखेवडे सांसारनी अनिसता समझने छे, सांसारिक कार्योंमां अल्पत राजवाची थता पापकर्मना बाधने प्रकट करे छे, स्वजन कुटुंबने अर्थे पछु अधिक पापकर्मने तारे शेक्षणाशेज भोगवतुं पडेशे अभ लक्षमां लावे छे, संसारना कार्यों लावे भवने विषे कर्त्ता छतां तेनाथी तुमि न पाभ्यातुं समझने छे अने छवटे हरेक प्रकारे संसारथी जिद्विषपाण्यं करनीने सांसारिक पापकर्मी कार्योंथी परउभुभ करे छे, आ प्रभाषे ते बने प्रकारना संग अल्पत लाभकारक छे जेतुं वर्षुन करतां पार आवे तेम नथी. एवा महा उत्तम अने आ दोऽ तथा परसेऽक अनेमां हित करनार सत्संगतिना लाभनुं तो शुं क्षेत्रुं परंतु तीति नि-पूण्य सनिभवनो संगपछु अनेक प्रकारना लाभ करे छे. क्षुं छे के—

पापान्निवारयतियोजयतेहिताय
गुह्यानिगूहतिगुणानुप्रकटीकरोति
आपद्गतंचनजहतिददातिकाले
सन्मित्रलक्षणमिदंप्रवदंतिसंतः ॥

भावार्थ—पापतुं निवारण्य करे छे, हितने भाटे योजना करे छे, शुद्ध वातने गोपये छे, शुष्णुने प्रकट करे छे, आपत्तिमां पडतां छतां पछु तजतो नथी अने योऽय सभये ने नोईजे ते आपे छे. सनिभवनां लक्षण्य आवां होय छे अभ संत पुढेये कहे छे.

विचार करो कु ज्यारे सनिभव पछु आगा आगा लाभ करे छे तो पूर्णिकृत उत्तम संगतो केटवा लाभने जित्यन डरेह भार्थातुं अनिंक लाभ जित्यन करे अमां डिक्कितु पछु आर्थ्य नथी भाटे स्वहिताकांक्षी ज्ञनोजे आवश्य उत्तम ज्ञनोतो संग करवो नेथी आ दोऽ अने परसेऽक अनेतुं हित तथास्तु.

सामायिक.

सामायिक गो आरक्षेने निरंतर आचरणीय लौक्या छे, शावक्रेने आ-गीकार करवाना आरक्षत गांडु सामायिक शो नवमुं छे अने गो शि-

सामायिक.

२३

क्षावत गयाय. छ. ए व्रत तेनी पूर्वे कहेला आई व्रतते अनेणातभयु-
खुने मुष्टि करनार, अविरति क्षायगां तृष्णमध्यावे गणेशी अनाहि अशुद्ध.
ता-ने विभाव परियुक्ती-टेव-तेने गयाहनार, आत्मिक-युक्तोऽनुभव
करवनार एवे सहजस्वरूप रसास्वादानींगज प्राप्त करावनार छे.

सामायिक—आर्तशैद्र ध्यानती भगिन्युति ३५ टिक्के ते अशुग सावध
व्यापार तेनो लाग करी आमले सागता परियुक्तमां राखे ते अथवा
समस्य आयो लाभःसमायःसङ्कृत सामायिकं श्रृङ्खे. रागद्वे रडीत ४३
ने गानदर्शन अने शःविनो आय शेषे लाग प्राप्त धाततेने सामायिक कहीए

शास्त्राकार तेना आर जेद कहे छे-१ अभुक पाहुं आध्ययन करी
संपूर्णं मुख्याठ करीने उठवानो नियम करी ऐसवुं ए क्षुतसागायिक २.
शुद्ध समक्ति पाणवुं ते समक्ति सामायिक. ३ ऐधडी प्रभाषु सावध
व्यापारतो लाग करी ऐसवुं ते देशविरति सागायिक. ४ सर्वविरति सा-
मायिक ने सांखु मुनिराज धाले छे ते आरिन सागायिक.

प्रस्तुत विषयको देशविरति सागायिको छे. हिवसनो समथ भाग आ-
शुभक्ष्या, पापारंभ, अशुक्ष्यान विगेत्रे परिपूर्णं संसारी क्षयोगां
गाणतां तेगांथी बने तेथेस व्यप्त व्यापानी ते समयगां सामायिकाहि शु-
भक्ष्याओ. कर्त्तवी ए उत्तम ज्ञनेने भुपृष्ठुरूप अने संसारनो क्षय करवाने
संबन्धूप छे. पर्माधर्मितोनी ए इच्छा छे, आपदानी ए गुण्या करणीछे,
ज्ञाने तेनारी धर्मा प्रमारना संजनी भाग्यि छे. कारब्जु ६ सामायिक ने
मुनिराजनी वानशी अमया निधानी छे. असाक्षिक ८ संसार पुरिक्षम्भण
करी निधाग करवाने इप्रे कृत्य छे. भट्टे ने भेद्यार्थिज्ञन होय ते ऐध-
डी आगाम्यवृप्त सन्दर्भ चेतना कराने, सहज स्ववृप्तनी चाहना. धरीने
अने भृक्ता सातव त्रिकरण येणे तर्थने सामायिक करे. शेक्षा क्षमायिको
समय शाळकरे ऐ धरी प्रभाषु क्षेत्रा छे. ऐ धरी पर्यंत सर्व
ईदानिष्ठ वस्तुने विषे समपरिष्याग राखे—सर्वं ज्ञने पेताना आत्मा स-
मान गणे. ए सामायिक क्षियावुं २५३४ छे. शास्त्रां इत्युं द्वे के.

विद् पसंसासुसमो, समोय माणावमाणकारीसु; . . .

सम संयण परजणमणो, सामाह्य-संगओजीवो. १

२४

श्री ज्ञेनदर्श प्रकाश।

जो समो सब्बभूएसु, तसेसु थावेरसुय;
तस्स सामाइयं होइ, इमं केवलिभासियं. २

भावार्थ—डॉर्ड निंदा करे, डॉर्ड प्रशंसा करे, डॉर्ड मान करे, डॉर्ड अपभान करे तो पथ सामायिक भाव एहो पछी समेताइप शुभ परिणाम राखे, रवन्नन तथा परन्नननी उपर सगभाव राखे तेने सामायिकी छव न छुवो. सर्व प्राणीभाव ने त्रस तथा थावर छुवा छे तैने विषे सगता परिणाम राखे तेने सामायिक शुद्ध होय ऐम उन्हो लगवांते कहुँ छे.

सामाइयं तु काउं, गिहकज्जं जोवि चितएसहो

आत्तसद्वायमओ, नीरथ्यं तस्स सामाइयं॥ ३ ॥

ने भतुष्य आत्त रौद्र ध्यानने यथा भटी रामायिक करे, सामायिक भावधर संबंधी सत्यद झास दिल्लरे तेतुं सामायिक निर्थेक होय.
गाए ने प्राणी आत्तरौद्र ध्यान न ध्यावे अने शुक्ल तथा धर्म ध्यान ध्यावे ते प्राणीतुं सामायिक शुद्ध न्यायवुं. शाखाकारे व्यवहार न थी, ए प्रभाषे सामायिकतुं स्वइप कहुँ छे. निश्चय गते तो श्री गण-वती सूतमां कहुँ छे के—

अप्पा सामाइयं अप्पा सामायियस्स अठा

ईसादि—आतान सामायिक छे अने सामायिकतो व्याप्ति पर्णु आत्मान छे निज शुद्ध स्वइप भावमां रखो आतमा, उपराम ज्येष्ठरी रागदृष्टिप नेलने घोर्छ नाहे—आता परिणामित आहारे परपरिणामित निवारे तेने निश्चय सामायिक कहीये. अनी उपर शुभ द्रष्टे राष्ट्रीये व्यवहार सामायिक पाणवुं. कारण डे व्यवहार ते शृणवांत छे. तेरमा शुच्छाण्यासुधी ने छव व्यवहारिप घोडा उपर यडी संसारिप आधीतुं उक्षवान की वारे अहंपत्ये पहांचे लासुधी घोडा नेहांगे. पछी महेल उपर यडे लावे घोडातुं धाम न पडे. ए प्रभाषे व्यवहार ए घोडाती परे साधक छे. गाए तेने छोडी होवा न नेहांगे.

ऐम सामायिक करता सावध व्यापारनो लाग थाय गाए सामायिक ए ओष्ठ छिया छे. ए व्रत उद्यं आवानुं मडा हुंस्म छे देवतायो पथ पोताना—हुद्यमां सामायिकती सामग्री गोवनमा ठिच्छा करे छे—ने शोक अद्वैत भावं सामायिक करकुं उद्य आवे तो भावां देवपथं सद्ग थर्द

सामायिक.

२५

नय... ए माटे आवडोचे भनुष्य भव पामी शुद्ध सामायिक करवा उ. घमवंत थवु.

ते सामायिक करवानी अङ्गाचाणा आवडा ए प्रकारना हेय ने राज मंत्री, समर्थ व्यवहारी आदि रीढिवत आवडा हेय ते तो मोटा आ-उपरथा आदरसहित उपाये मुनिमाराजन सभीपे आवीने सामायिक करे नेथी शासननी शाभाभां वृद्धि थाय. तेन लाये खीज अनेक भाष्यसो ते शुभ छियानी प्रवृत्तिमां उद्युक्त थाय अने ने सामान्य भनुष्य हेय ते उपायपे, पौधवशाणाचे, जिनमादिसमां आयवा पेताना धरभां ऐकांत स्था-नके घेसीने सामायिक करे. परंतु उत्तम भनुष्ये नेम पेताने कुरसद हेय तेग अथवा तो कुरसद भेजवीने पण दिवस प्रत्ये पेताथी अने तेटला सा-मायिक करवा.

इटवाचेक दिन प्रत्ये उत्तम काणज ऐटले एक दिवसमां घेज सामायिक करवानुं कडे छे पण ते शास्त्रेत्त नवी कारणु के सामायिक करवार आवडने तेटला सभग्यने गाटे साधु सभान कडेल छे आवस्यक यश्ची अने प्रशस्ति आदि शास्त्रेभां आवडने वारंवार सामायिक कर-वानुं कड्हुं छे

सामाइअ पोसह संठिअस्स, जीवस्सजाइ जोकालो;
सो सफलोबोधव्वो, सेसो संसार फल हेऊ॥

अर्थ—सामायिक तथा चैपधने विषे अणीनो ने काण नय ते स-इ नाणुवो अने शेष काण ने छे ते संसार उपार्जन करवाने का-रथुभूत छे.

वणी सामायिक पारवाना सूत्रभां कड्हुं छे के—

सामाइअ वयनुक्तो, जावमणे होय नियम संजुक्तो;

छिन्नइ अमुहं कम्म, सामाइअ जत्तिआवारा. १

सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावउ हवइ जम्हा;

एएण कारणेण, बहुसो सामाइअं कुज्जा. २

भावार्थ—ज्यांसुधी छव सावध व्यापारना पञ्चभाषुनेविषे संयुक्त हेय वणी सामायिक प्रतोविषे संयुक्त हेय लां सुधी ए अशुभ कर्मने

२६

श्री कैलाशन भ्रक्तारा.

छेद; केटलीनार सामायिक करे तेटलीनार आशुभ इस पत्रे छेद; ओटसा गाटे सामायिक करती वर्णत आवक अगाध ओटसे साधु सगान होय. ओकारणु माटे तलना. जाणु पुरुषो धर्षीनार सामायिक करे.

ओ सामायिक करता भनना दश होय, वसनना दश होय तथा काया ना आर होय ए प्रमाणेना अनीश होय न लागे ते गाटे निरंतर उपरोग राख्यो. ते अनीश होय नीचे प्रमाणे—

प्रथम भनना दश होय—

१. अविवेकहोप=सामायिक लाईने सर्व किया करे पण भनमां नि. वेक नहि ते. ओटसे सामायिक शुं चीज छे. विवेक सडित सामायिक करवायी क्वाणु तर्था छे? अनेनारी शुं इण प्राप्ति छे? ओ क्वानुं साधन छे? ओगां क्वाणु परसाई छे? व्यवहार सामायिक क्वानुं अने निश्चय सामायिक क्वानुं? सामायिकनी शैतानिनेथरेहोशा प्रमाणे क्वी छे? विगेर विवेरे भिना ने सामायिक करे ते अविवेकनामा प्रथम होय.

२. यशवांछाहोप=सामायिक करीने क्षीरिनी वांछना करे ते ओटसे सामायिकतो निर्भरानो हेतु छे अने शिवपद्मुं साधन छे तेने भद्रे तेनाथी क्षीरिनीज वांछना राख्ये ते.

३. धनवांछाहोप=सामायिक करवायी धनप्राप्तिनी ईच्छा करे ते.

४. गर्वहोप=सामायिक लाईने भनमां गर्व आख्यवो के छुंज धर्मने जाणुनारो छुं, हुं क्वानुं सामायिक कइं छुं? ठील मुर्ख लोडो सामायिक करवायां शुं समजे? विगेरे क्वाई पण रीततो गर्व करवो ते.

५. भयहोप=ओटसे क्वाई पण प्रकारना भयथी लोडोगां पोतानी निंदा थशे ओली ठीडीकथी सामायिक करे पण भनमां सामायिक करवानो भाव न हेय ते.

६. निदानहोप=सामायिक करीने धनादिक्तुं अथवा ठीछ क्वाई ईच्छित वस्तुनु नियाणु करे ते. कारणु के सामायिक्तुं तो भद्र, इण छेते न. विचारतां ओसा ओया द्वायदा उपर लक्ष राखी नियाणु करी ते वेची नांच्या वरायर थाय छे.

७. संशयहोप=संशय युक्त सामायिक करे ते ओटसे भनमां विचारे के सामायिक करीजे छीजे तो खरा पण आगल उपर इण थशे के नहि? ओग तलनी प्रतीति नहि ते.

सामायिक.

४७

८. क्षायदोष=क्षाय भयु सामायिक करे ते. एवं डॉर्टी साये शेषतं छ तेथी तेन ज्वाय हेवो नथी अग धारी सामायिक करी ऐसे ते. सागायिकगां तो पूर्वे ने क्षाय कर्ता होय तेनो लाग करवो नेहजो गेवुं रहस्य छे छतां क्षाय सुक्त करे तो ते हापित गण्याय.

९. अविनयदोष=विनय रहित सामायिक करे ते. विनय ते शुश्र आ. थवा रथापनार्थानो नाण्यावो.

१०. अभु मानदोष=भु गान रहित सागायिक करे पाण्य भक्ति-बावधी न करे ते.

११. वयनना दश दोष—

१. कुसित वयन दोष=ने वयन सांभणी डॉर्टी लक्जल, भय, कृपायाइक उपजे ते कुसित वयन. सागायिक लर्डने अवा कुसित वयन ऐसे ते कुसित वयन दोष.

२. सहसात्कार दोष=सागायिक लर्ड आगण पाठगानो उपयोग राख्या शिवाय आणुविचायु वयन ऐसे ते.

३. असदारेहणु दोष=सागायिकगां डॉर्टी असद दोष (तडोगत) युक्ते ते.

४. निरपेक्ष वाक्यदोष=सामायिक लर्ड शास्त्रनी अपेक्षा विना स्वगतिना वयन ऐसे ते.

५. संक्षेपदोष=सामायिकगां सूतपाडे वयन संक्षेप करी ऐसे, आक्षर पाठाहि धीन करीने कहे ते.

६. क्लब कर्मदोष=सामायिकगां डॉर्टी साये क्लेश करे ते.

७. विकथादोष=सागायिकगां सञ्ज्ञाय, ध्यान, धर्मकथा, गहा पुरुषना चरित आथवा तीर्थातीकानो भडिभा विग्रे छिया करवानी कही छे ते प्रभाष्य न वर्तता राज्याहिक विग्रेनी नार विकथा करे ते.

८. हास्यदोष=सामायिकगां डॉर्टी भक्तरी करे ते.

९. आशुद्ध पाठदोष=सागायिकगां सूत्राहिक उच्चार करे तेगां सुखधी संपदाधीन आथवा -हस्य आक्षरते डेकाणु दीर्घ ऐसे, डॉर्ट हेकाणु भात्राधीन आथवा आधिक उच्चरे, आशुद्ध पाठनो उच्चार करे, यद्वातदा सूताक्षर कहे ते.

१०. सुषुमायु वयनदोष=सागायिक लर्डने उतानगेंडपाठनो, उच्चार

२८

श्री जैनवर्म प्रकाश.

करे, स्पष्ट प्रकट आक्षर न भिज्यारे, पहुंच, गायात्रुं डेकाणुं भावम न पड़े, माझीने पेड़े बाणुआणुआट करे, ऐम गडाअड करीने पाड़ संपूर्णु करे ते.

हुने भार भायाना होप—

१. सामाजिक करती वर्खते पग उपर पग चडावीने जेसे, महात्म्य पर्याय थडी विनय शुशुनी वृद्धिनी हानी करे, वस्त्रवडे ननु बांधीने जेसे ते प्रथमदोप, गाठे ने वडे विनय शुशु रहे भिज्यता न जाणुप, अज्ञयाणा न थाय तेवी रीते जेसवुं.

२. चणासनहोप=आसनने स्थिर न राजे, वारंवार आगण पाठण चणायगान करे, जेते अपतता धणी करे ते.

३. चणद्रष्टिहोप=सामाजिक लर्हने द्रष्टिने नासिका उपर रथापी, भनमां श्रुतोपयोग राष्ट्री, भैनपणु ध्यान न करे, शास्त्राज्ञास करवे, होप तो ज्ययाणुक्त मुहूर्पति राष्ट्री पुस्तक उपर द्रष्टि राष्ट्री, विग्रे शुद्ध सामाजिकी शैली ने शास्त्रकारे कहेली छे ते. शैलीनो लाग करी चकित मृगनी जेम चारे दिशाए नेत्रा झेरवे ते चणद्रष्टिहोप.

४. सावध क्षियाहोप=कायावडे कांठ सावध क्षिया करे अथवा सावध क्षियानी संसा करे ते.

५. आलंणनहोप=सामाजिकभां दिवाल प्रसुभनो आथय छाडी निरवहृष्टभ जेकासने जेसवुं ओ रीत छे ते रीत लागी दिवाल थांभत्वा विग्रे रने पीड लगावीने जेसे ते. कारणु के पुङ्ज्या विनानी दिवाल उपर घण्टा छर्वोनो विश्राम होप लां पीड लगाउता धण्णा छर्वोनी विराखना थाय अथवा ओडीगणु दृष्ट जेसवाथी निद्राहि प्रभाव वधे अने तेथी शुभ ध्यानाहि क्षियाभां ज्यागी आवे तेथी ते होप युक्त छे.

६. आकुचन प्रसारण दोष=सामाजिक लर्हने कारणु विना हाथ पग संकोचे अथवा लांआ करे ते.

७. आलस्यहोप=सामाजिकने विये अजे आलोर भरडे. याचका होडे, करडका करे, कम्बर वांझा करे विजे र प्रभावी आहुताना कर्त्तों करे ते.

८. भोग्यहोप=सामाजिकभां अंशुलि प्रसुभने वांझी करी करडका (याचका) कर्त्तो ते. ९.

९. मवस्यहोप=सामाजिक लर्हने शरीरे खस प्रसुभ थर्ह होप ते वक्षुरु जेक्ष डतारे ते.

अमरदत्त अने मित्रानंद.

८६

१० विभासणुदोषः-सभायकिगां आगं विभासणु करावे, हाथनो २४।
हे, गणे हाय दृढने ऐसे ते.

११ निद्राहोपः सामायिकमां निद्रा करे ते

१२ सामायिकमां टाठ प्रभुभना प्रथमाथी पेतानो समर्त आगे
सारी पेठे वस्त्र ओडे ते.

ओ प्रगाणे गनना दशहोप, वयनना दशहोप अने द्यावाना १२ ओ
सर्व अतीशहोप थाय. विवेकी पुरुषो ते दोष टणाने शुद्ध सामायिक-करे
(अपूर्ण)

अमरदत्त अने मित्रानंद

(सांधुषु पाने १५ था)

लांथी नासी चालता मित्रानंद भोया अरक्षने विषे हाँझल थयो।
त्यां एक सुंदर सरैवर नेहि तेमांची जणपान करी संगीप रहेला वरवृक्ष
तजे विश्राम केवा सुई गयो तेवामां सर्प तेने डस्यो। डॉर्ड तपस्वी त्यां
यहने नतो हुतो तेषु द्याथी विघालिमनित जण छांटी तेने सण्वन कः
यो। पछी तपस्वीना पुछवाथी तेषु पेतानो सर्व वृत्तांत जखांव्यो। एहसे
ते पेताना रथान तरह गयो। पछी मित्रानंद भनमां विचारवा लायेयो। के
‘हुं कदाचहना वशथी चित्रसंगथी ब्रह्म थयो। अरेरो आ। करतो हुं मृत्यु
पायेयो हुत तो सारं हुतो हुवे डॉर्ड रीते भारा भिन पासे नंडो’ यो भ
विचारी लांथी चालयो। रस्तामां चोर लोडो तेने पकडी पेतानी पक्षी प्रत्ये
लाई गया। तेझाए तेने मरुभयाहुक वण्डिक प्रत्ये वेष्यो। ते वण्डिक पार-
सुकुण नामे देश तरह जतो। जहतो। रस्तामां एक दिवस उज्जन्यनीना भां
ब उद्घानने विषे रात्रिवासो। रस्ता। रातीनेविषे मित्रानंद पेताना स्वत्प भं
धने तेहित नगरती आठिना नाणीया वारे नगरमां पेसवा गयो।

ते समर्पे ते नगरने विषे चोरनो। उपद्रव अहु वध्यो। हतो तेथी लु-
पतिशे डॉर्डवाणने चोर पकडवा भाडे धधी ताक्षीद करी हती। रात्रि स-
मर्पे चावे मोर्ज मित्रानंदने चोरनी जेम प्रवेरा। करतो। डॉर्डवाणे नेयो।

તરતજ્ઝ તેને પકડી મધુર બંધને બાંધી થિય અને સુધિના પહારે ગારી પોતાના સેવકોને બોલાવી તેનો વધ કરવા આગ્રા કરી. તેણો તેને શિપાનદીના તર ઉપર આવેલા વટચૂક્ષ સમીપે લઈ ગયા તે સમગે હે રણજન્મ! તારો મિત્ર વિચારવા લાગ્યો છે ‘ પૂર્વે શખે ને વચ્ચન કણું હશું. તે સત્ય થયું શાખવિષે પણ કણું છે કે—

યત્ત્રવાત્ત્રવાયાતુ, યદ્યાત્દ્વાકરોત્ત્વસૌ;
તથાપિમુચ્યયેત્ત્રપ્રાણી, નપૂર્વેચૂટકર્મણ: ૧
વિમવો નિર્ધેનલંબન, વંશનમભરણ તથા;
યેનયત્ત્રવદ્યદારન્ય, દસ્ત્યતત્ત્રવદ્યાત્ત્રેતુ.
યાતિદુરમસૌનીચો, પાપસ્થાનાદ્યદુરુતુ;
તત્ત્રવાનીયેત્ત્રમ્ભોડ: મિત્રવસ્તૌદ્વકર્મણા. ૩

ભાવાર્થ—ગમે લાં જણો જણે ગમે તે કરો તો પણ આ પ્રાણી પૂર્વ કૃલકર્મથી મુક્તાતો નથી. વિભવ, નિર્ધેનપણું, બંધન અને મરણ ને પ્રાણીને જ્યાં અને જ્યારે પામવાતું હોય છે તે પ્રાણીને લાં અને લારેજ પ્રાસ થાય છે. આ શું હુઃખારક રથાનકથી ભય પામીને હૂર જર્તો રહે છે પરંતુ તેના અભિનવ પ્રેઠ કર્માં તેને લોન પાછો લાવે છે. આ પ્રમાણે વિચારે છે તેવામાં તો આરક્ષક પુરુષોણો તેને વૃક્ષ ઉપર બાંધ્યો અને તરતજ્ઝ તેને પ્રાણ નિયુક્ત કર્યો. અન્યદા લાં રમનાર ણાળકોની અદેલિકા પણ હુણે કર્મયોગે તેના સુખ વિષે પરી.”

પછી તે અંમરહસ્ત રાજ યુશના સુખથી પોતાના ગિત સખાંધી એવો વૃણાત શ્રવણું કરી તેના યુણોતું સ્મરણું કરતો. આસાત વિલાય કરવા લાંધ્યો. દેવી રલમંજરી પણ તેના યુણું સમુદ્દેને યાદ કરી મહત્ત હુઃખ ધારણું કરવા લાગી. બનૈને એમ વિલાય કરતા જોઈ યુશ મહારાજાણો કણું.

હુઃરાજનું હુઃખનો લાગ કરી ભવસ્વિષપ્તનો વિચાર કરે. આ ચાતુર્જિ તિક સંસારને વિષે પરમાર્થથી વિચારતા પ્રાણિને સુખતો છેજ નહિ. નિરંતર હુઃખનું વત્તે છે. સંસાર મધ્યે એવો કેદ્ય પ્રાણું નથી કે કેને સુલુચે ખીડા નહિ. પરમાર્થ હોય. ચક્રવર્તિ વાસુદેવ પ્રમુણ મહા પુરુષો પણ

अभरदत्त अने भित्तानंद

32

भरखुते शरण्य थया छे. माटे हे राजन्! शोङ्को त्वाग करी धर्मकर्यने विधे उद्यग करो नेथी आनी हुँ ख संतति पुनःप्राप्त न थाय.'

राजा: 'स्वाभीन्! हुँ धर्माद्यग करीश परंतु भित्तानंदने ज्ञव तांथी चवीने क्यां उत्पन्न थयो छे ते कहो।'

शृः तांथी चवीने तारी औं रत्नभंजरीनी डुक्षिने विषेषु पुनरप्यु हुँ लप्न थयो छे. क्षरशु के तेषे भरखु समये तेवा प्रकारतु चिंतन इयु हुँ दु. दु. भरेगूर्खु समये तेगो बन्ना थयो ज्ञने कमलयुम ऐतुं तेतुं अभिभावन यसे.

राजा: 'स्वाभीन्! भक्तासा भित्तानंदने विना अपराधे चोरनी क्षेम गरखु केम प्राप्त थयु? देही रत्नभंजरीने भये भारीतुं क्षबंड केम आन्मु? आरे आपापायुथीन थंडु वियोग केम थयोह अने अभारे पररभर स्नेहनी आधिकता शा क्षरखुथी थई? ते कहो।'

पछी मुनि अडाराण याननी धयोजना करा ते स्वर्वाची उत्तरपत्र थी योळ्या 'हे नरामिति! अहीयो त्रीने भवे हुँ क्षेमंडर नामे डौट्योइ होतो. तारे सत्यशी नामे ऋषी होती अने तारा धरने विषे चाउसेन नामनो कर्मकर होतो. ते कर्मकर अत्यंत विनीत होवाथी दृपतिने प्रीय होतो. एक द्विस तारा क्षेत्रने विषे ते काम करतो होतो तेवामां पाडेशीना क्षेत्र विषे डाई परिक्षेप धान्य शंखा अङ्गखु करतो ज्ञेई योळ्या 'आहो! आ चोर छे तेने आ वृक्ष उपर लटकवो' क्षेत्रस्वागित्रे तेने काईपण न क्षुँ. ए कारखुथी ते परिक्षेप योताना भनमां गेह पाम्हो. अने योळ्या ने आ क्षेत्रनो भालेक काईपण योळतो नथी परंतु परक्षेत्रने विषे रहेतो आ पापात्मा केवा निष्कुर वयन कहे छे. एम चिंतनतो ते योताना अङ्ग प्रत्ये गेहो. ते कर्मकरे ते समये क्राप सहित निष्कुर वयन योळवाथी निवृत्त कर्म बांध्युः.

गोक द्विस भोजन करता पुन वधुने गेहे क्षवण आएउयो. ते सभये डौट्यिकपती सत्यशी योळी 'र निशाचरी! हुँ नाना क्षवणे केम भोजन करती नथी नेथी गेहे न आएक' एम योळवाथी तेष्ठीत्रे निवृत्त कर्म बांध्युः.

३२

श्री जैनधर्म प्रकाश.

ओक वार होमंडर कौटुम्बिक उर्मिकर प्रत्ये कहुँ 'आने आहीयी कोः उ हुरो ओक आमे कांठ माम छ भाए तारे लां नवुँ पंथो' ते सभये उर्मिकर ऐलंग राया के हुं भारा स्वजनने गोप्याने उल्लिखि हुं, योग रां लणी ईर्ष्यामात्रथी कौटुम्बिक भोव्यो। 'तने स्वजननो मेणाप डाठ दिवस न अप्यचोइ, तेना ओवा वयनकी कमीकरना गनमां जेह थयो पण्य लांज रियत रखो।

ओवामां सुनिक्ष तेना धर प्रत्ये आहाचर्यै आव्युँ. ते सभये ते कौटुम्बिक दुर्वषे ईर्ष्यामात्रथी क्षीपत्ये कहुँ 'सुनिमहाराज्ञने दान आणोऽते पक्षु द्वंगेह पाण्याती आ सत्पात्रनो योऽते गोप विष्वद्वारा-युक्त बाजूना वावा दाणी अने प्राशुङ्क अस्तपात्रतिष्ठउते सुनिमहाराज्ञनो प्रतिवास्य-ते रामपे साध॑प बंडोऽ कर्मिकर जनमां रिवारवा दाणोऽते 'आ ज्ञापती धन्य छे ज्ञेन्याते ते भोजनत चागये चोताना येहपत्ये भधारेला सुनिमहाराज्ञनो आ प्रगाणे सत्पात्र क्षेया 'ओवामां हैवयोजे ते लषेना गरतक उपर विद्युत परी नेथी नांगे साये काळ करी सौधर्म देवलेडे हैवपणे उत्पन्न थया। लांथी क्षीमंडरनो अ॒न यीने हे राजन् तुँ थयो। सलशीनो अ॒न यीने आ रक्षांजली थई। कमीकरनो अ॒न यीने तारो भिन्न भिन्नान्ह थयो। के लुवे वयनवडे ने ने कर्मनो वंध क्षेयो होता तेने आ भवे ते ते कर्म जोगवया पउचा, लो राजन्, पूर्व भवे उसता ने कर्म वांधुँ होय ते परभवे इदन करता जोगवयुँ पडे छे।'

युँ भद्राज्ञन ओ प्रभाणे भोली रखा तेवामां राजनराणी मुर्का पाम्या अने 'मनेने ज्ञातिस्मरण उत्पन्न थयुँ, पूर्व जन्मतुँ समय स्वदृष्टुँ, अष्टी चेतना पाभनि राज भोव्यो। हे भगवन्। दलनामासकरवडे आपे ज्ञेकहुँ ते सर्वे तेज प्रभाणे कमणां में प्रत्यक्ष नेवुँ, हवे ने पर्मगेवियो भोटी रेष्यतुँ होय ते धर्म कृपा करी भने कहो।' युँ श्री कहुँ 'पुन उत्पन्न थया परी तने दिक्षा प्राप्त थशे, आहुना तारे आद्य, धर्मनी गोप्यता छे, अटके राज्ञ्ये ईर्ष्यामात्रथी कमीकरना द्वादश वर्त आंशीकार कीया।

(अपूर्ण.)

जैन पंचांग.

(संवत् १९४६ ना चैत्रथी संवत् १९४७ ना द्वाषष्ठी शुद्धी.)

जैन रोतिने अनुसरीने वार्षिक तिथियोंनी वधवट तथा वार्षिक जैन पर्व दाखल करेला होवाथी जैन वर्गने भुक्तु उ. पयोगी છે. સूर्योदय तथा સूर्यास्तना વर्षततु કોઈક તથા દિવસ અને રાત્રીના ચોથડીયાતું ડેણું વિગેરે દાખલ કરેલા હોવાથી વિશેષ ઉપયોગી ઉ. આએ તેનો લાલ લેણા દર્શનનારે માણાની જરૂર. હીમન એક બાંનો. થાર નક્કલ ઉપર મંગામનારને ગોસ્ટેજ માફ.

જહેર ખખર.

તમામ પ્રકારની જૈનવર્મની ચોપડીઓ વ્યાજણી કીંમતે અમારી ચોક્કીસમાંથી ભળશે. પરહેશાખાળાને પોસ્ટમાં મેકલશુ.

“એંગ્ઝો વનીક્યુલર પ્રિંટિંગ પ્રેસ.

ઉપરના નામનું છાપખાતું યોડી મુદ્દત થયો અમોશે અમદાવાદમાં ખાનકારને નાડે ધાંચીની વાડીમાં ઊંડાયું છે, સાંચા, ટાઈપ, વિગેરે તદ્દન સર્વ સામન નવોજ છે. અગારા પ્રેસમાં પંચાલ, ગુજરાતી, ખાળોધી, વિગેરે સબળું કામ થાપ છે. તથા ધણીજ સારી રીતે અને ક્રીદાયતથી તેમજ ભાગેલી મુદ્દતમાં કરી આપીએ છીએ. ભાટ ને સાહેયોને કાઈ છપાવતું હુય તેમણે નીચે સહી કરનારને ભળવું અથવા પત્ર લખવે.

| | |
|--|---|
| આમદાવાદ ખાનકારને નાડે ધાંચીની વાડી. | } નથુલાઇટનિંબ મારકૃતીઓ. એંગ્ઝો વનીક્યુલર પ્રિંટિંગ પ્રેસની આલીક. |
|--|---|

ल्वा जमनी पहोचः

१—३ शा. तत्कर्त्यंद भाईयंद.
 १—३ शा. साकुर्यंद ऐतशी.
 १—३ वारा. प्रेमज्ज गीगल.
 १—३ मेहेता. रतनयंद उज्जमयंद.
 १—३ शा. भगनलाल मेणापयंद
 १—० शा. जुडा वालज.
 १—० संधवी. दामेदर नेमयंद
 १—३ शा. हेवकरखु छवेरयंद.
 १—३ शा. गीरधर लालयंद.
 १—३ गांधी काणीदास हेवकरखु.
 २—६ वकील. जमनादास नगीनदास
 १—३ मेता. नरशी अमरशी.
 २—६ शा. मेराज शामज.
 १—० शा. अवेर भाईयंद.
 १—३ शा. जगन्नन आयाभाई.
 १—३ शा. खुबयंद राईयंद.
 २—६ शीठ. वीकुललाल वाडीलाल.
 १—३ वकील. भगनलाल सङ्खयंद.
 १—३ शा. नेठीदास सांकणयंद.
 १—३ शीठ. युवापयंद हंसराज.

१—६ शा. भीषा गानयंद.
 १—३ शेठ घेवयंदभाई जस्सराज.
 १—४ शा. आयाशा करमयंद.
 १—३ शा. चतुर गोडण.
 १—३ शा. मुणज अवेर.
 १—३ शा. अडार चत्रभज.
 १—० भावसार. लभभीयंद गीरधर
 १—३ रा. पदभशी नेमयंद.
 २—६ शीठ. नेमयंद मेणापयंद.
 १—३ शा. पीतामर आणुयंद
 १—० शा. प्रेमयंद पीताम्परदास.
 १—३ शा. छगनलाल जुवराज
 ०—२ शा. युनीलाल मेतीयंद
 १—३ शा. उत्तमयंद करमयंद
 २—७ रा. रा मुणयंद यावाभाई
 १—३ शा. ललुभाई मुरयंद.
 १—४ शा. नेमयंद लीमज.
 २—७ डाक्तार. जमनादास प्रेमयंद
 २—० शा. पानायंद तेज

